सारांशिका

कविता साहित्य की वह विधा है जिसने अपने प्रस्थान बिंदु (मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतिः समाः/ यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम्) से ही मनुष्य के हृदय में संवेदनाओं को सहेजने का काम किया है। कविता मनुष्य की जीवन-दृष्टि को विस्तार देती है। वह उन मूल्यों के संरक्षण का कार्य करती है जिससे मनुष्यता की बुनियाद है। कुँवर नारायण अपनी कविताओं में तर्क और संवेदना को जीवन के आकलन का माध्यम बनाते हैं। इन कविताओं में उदात्त दृष्टि से जीवन को देखने की कोशिश है। यही वजह है कि मैंने शोध-कार्य के लिए "कुँवर नारायण के काव्य में जीवन-दृष्टि एवं मूल्य-बोध" को विषय के रूप में चुना। इस शोध-प्रबंध को पूरा करने के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये-

1. मानव जीवन में कविता की भूमिका तथा उसकी चुनौतियों एवं संभावनाओं की पहचान करना।
2. कुँवर नारायण की कविताओं में व्यक्त जीवन-दृष्टि को उद्घाटित करना।
3. युगीन संदर्भों में कुँवर नारायण की कविताओं का मूल्यांकन करना।
4. कुँवर नारायण की कविताओं में निहित मूल्य चेतना को विवेचित करना।
5. कुँवर नारायण की भाषिक विशिष्टता की पहचान करना।

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध-कार्य को संपन्न किया गया। शोध-कार्य को कुल पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है-

1. **कुँवर नारायण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व:** इस अध्याय का प्रथम उपअध्याय 'कुँवर नारायण का सामान्य परिचय एवं व्यक्तित्व' है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण के प्रारंभिक जीवन के उन पहलुओं पर विशेष चर्चा की गयी है जिनका उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। साथ ही इस उपअध्याय में कवि की शिक्षा, प्रकाशन और

उपलब्धियों को रेखांकित किया गया है। कुँवर नारायण के व्यक्तित्व-निर्माण में लखनऊ के साहित्यिक वातावरण ने और डॉ. राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेन्द्रदेव, आचार्य कृपलानी जैसे विद्वानों के साथ-साहचर्य ने क्या भूमिका निभायी, इस बात की पड़ताल भी इस उपअध्याय के अंतर्गत की गयी है। कुँवर नारायण का जन्म 19 सितम्बर 1927ई.को फैजाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ। बचपन में पहले माँ और कुछ समय पश्चात बहन की मृत्यु, इनके लिए गहरी त्रासदी रही। लखनऊ के साहित्यिक माहौल और आचार्य नरेन्द्र देव जैसे विद्वानों के संग-साथ ने इन्हें साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया। कुँवर जी 'युगचेतना' और 'नया प्रतीक' जैसी पत्रिकाओं से भी जुड़े रहे। 1971 में 'आत्मजयी' को हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, 1973 में 'आकारों के आस-पास' को प्रेमचंद पुरस्कार, 1983 में केरल के कुमारन आसन पुरस्कार, 1988 में हिंदी साहित्य में विशेष योगदान के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का पुरस्कार, 'कोई दूसरा नहीं' को साहित्य अकादमी पुरस्कार, बिरला फाउंडेशन का व्यास सम्मान, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद का 'तुलसी सम्मान'(1995) तथा भारतीय भाषा परिषद का शतदल पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। एक कवि के व्यक्तित्व-निर्माण में संगति, अध्ययन और यात्राओं ने किस प्रकार भूमिका निभायी इस बात की पड़ताल इस उपअध्याय के अंतर्गत की गयी है। इस अध्याय का दूसरा उपअध्याय 'एक प्रश्नाकुल कवि का वैचारिक धरातल' है। इसके अंतर्गत कुँवर जी की वैचारिक चेतना को समझने का प्रयास किया गया है। ध्यातव्य है कि कुँवर नारायण दार्शनिक मिज़ाज के कवि हैं। मानव जीवन की सार्थकता, चुनौतियों और संभावनाओं से संबंधित प्रश्नों को कुँवर जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से उठाया है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं, भेंट वार्ताओं, टिप्पणियों आदि को आधार बनाकर साहित्य, संगीत, कला, भाषा, वाद, जीवन, प्रेम आदि के विषय में कवि के विचारों को जानने का प्रयत्न किया गया है। इस अध्याय का तीसरा उपअध्याय 'कुँवर नारायण की कविताओं में चिंतन एवं अनुभूति का स्वर' है। कुँवर

नारायण विचार पक्ष को कविता और जीवन दोनों के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण मानते हैं। परन्तु इस विचार पक्ष की प्रधानता के बावजूद उनकी कविता बौद्धिक रुखाई की शिकार नहीं हुई है। जहाँ एक ओर इन कविताओं में कवि की सजग वैचारिक चेतना की झलक मिलती है वहीं दूसरी ओर अनुभूति की सघनता को भी महसूसा जा सकता है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण की प्रत्येक काव्यकृति में व्यक्त चिंतन एवं अनुभूति के स्वर को विश्लेषित किया गया है।

2. **कुँवर नारायण और उनका युग:** इस अध्याय का प्रथम उपअध्याय 'कुँवर नारायण की कविता में युगबोध' है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कवि की समसामयिक दृष्टि की विवेचना की गयी है। अपने समय, उस समय का समाज, उस समाज में रहने वाले मनुष्य, उन मनुष्यों का जीवन और उस जीवन के विविध संदर्भ कुँवर जी की कविताओं में जिस रूप में अभिव्यक्त हुए हैं उनकी विवेचना इस उपअध्याय में की गयी है। कवि के सरोकारों में सिर्फ़ मनुष्य जाति शामिल नहीं है बल्कि समूचा पारिस्थितिकी तंत्र शामिल है। इस उपअध्याय में कुँवर नारायण की उन ऐतिहासिक और मिथकीय कविताओं की भी विवेचना की गयी है जिसका आधार तो अतीत है परन्तु संदर्भ आधुनिक मनुष्य और उसका जीवन है। कुँवर जी सिर्फ़ अपने समय की घटना पर पैनी निग़ाह नहीं रखते हैं बल्कि कवि की निग़ाह उस घटना के पीछे की मनोवृत्ति पर भी होती है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में घटना से ज़्यादा जीवन-अनुभवों को महत्त्व दिया गया है। इस अध्याय का दूसरा उपअध्याय 'कुँवर नारायण की दृष्टि में उनके समकालीन रचनाकार' है। चूँकि कुँवर नारायण किसी कविता या वाद की प्रतिबद्धता से ज़्यादा, जीवन से वाबस्तगी को महत्त्व देते हैं इसलिए वे जब अपने समकालीन रचनाकारों का मूल्यांकन करते हैं तो किसी पक्षधरता या दुराग्रह के शिकार नहीं होते हैं। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण के समकालीन रचनाकारों के विषय में उनके मतों का अनुशीलन किया गया है। समकालीनों के विषय में कुँवर नारायण के मत को

जानने के दृष्टिकोण से 'रुख' और 'आज और आज से पहले' महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। इनमें कवि की समीक्षाएँ, आलेख और संस्मरण संकलित हैं। अपने संस्मरण में अज्ञेय, रघुवीर सहाय, निर्मल वर्मा आदि को जिस आत्मीयता से कुँवर जी याद करते हैं उससे उनके आपसी संबंधों की प्रगाढ़ता का पता चलता है। घोर आत्मीयता के क्षणों में भी कुँवर जी ने अपने आलोचकीय विवेक की तिलांजलि नहीं दी है। और, न ही आलोचना करते हुए कभी दुराग्रह को अपने आस-पास भटकने दिया है। समकालीन रचनाकारों की रचनाधर्मिता पर जब कुँवर नारायण प्रकाश डालते हैं तो उसे पढ़ते हुए उनकी जीवन-दृष्टि का भी पता चलता है। इस अध्याय का तीसरा उपअध्याय 'नयी कविता और कुँवर नारायण' है। इस उपअध्याय के अंतर्गत नयी कविता के संदर्भ में कुँवर नारायण के विचारों का मूल्यांकन किया गया है। नयी कविता के रूप एवं कथ्य तथा तत्कालीन आलोचकों द्वारा की गयी नयी कविता की आलोचना को कुँवर जी किस तरह लेते हैं, इस तथ्य की पड़ताल इस उपअध्याय में की गयी है। ध्यातव्य है कि कुँवर नारायण 'तीसरा सप्तक'के प्रमुख कवियों में शामिल हैं। इस संकलन के वक्तव्य में उन्होंने नयी कविता के विषय में भी अपना मत रखा है। साथ ही, अपनी कविताओं में व्यक्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण के तीन प्रकारों (विचार पक्ष, कविता का संगठन और प्रयोग) को उल्लेखित किया है। कुँवर जी की आलोचनात्मक कृति 'आज और आज से पहले' में भी नयी कविता के रूप और कथ्य से संबंधित उनके आलेख संग्रहित हैं। उसे भी इस उपअध्याय में विवेचन का आधार बनाया गया है। इस अध्याय का चौथा और अंतिम उपअध्याय 'युगीन विसंगतियों के बरअक्स कुँवर नारायण' है। यह उपअध्याय कई मायनों में 'कुँवर नारायण की कविता में युगबोध' का अगला पड़ाव है। कुँवर नारायण की कविताएँ युग की विसंगतियों से मुठभेड़ करती हैं। हालाँकि इन कविताओं में प्रतिरोध की भाषा संयत है परन्तु एक सशक्त प्रतिरोध के लिए जिस वैचारिक दृढ़ता की आवश्यकता होती है उससे ये कविताएँ संपन्न हैं। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर जी की कविताओं में व्यक्त उस जीवन-

शक्ति को ढूँढने का प्रयत्न किया गया है जिसकी बदौलत कवि दफ़्तरों, दुकानों और कारखानों से अस्वीकृत होकर जीना पसंद करते हैं।

3. **एक अकुंठ कवि के काव्य में व्यंजित जीवन-दृष्टि:** यह इस इस शोध-प्रबंध का तीसरा अध्याय है। इस अध्याय का पहला उपअध्याय 'मानव जीवन में आस्था की कविता' है। मनुष्यता में कुँवर जी की गहरी आस्था है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं में मानव जीवन के पुनरुत्थान और पुनर्निर्माण के जो संकेत हैं उसे ढूँढने का प्रयत्न किया गया है। कुँवर नारायण की कविताएँ कई मायनों में बेहतर मनुष्य को गढ़ने का उपक्रम हैं। मानवीय विसंगतियों से परिचित होते हुए भी कुँवर नारायण मानव-जीवन के प्रति संभावनाशील हैं। उनकी कविता मनुष्य के लिए एक ख़ास तरह की दुनिया रचती है जिसमें मनुष्य परिस्थितियों के आगे घुटने टेकने के बजाय अपने नैतिक साहस के बल पर विपरीत से विपरीत परिस्थितियों का मुक़ाबला करता है। कुँवर जी की कविताएँ मनुष्य के भौतिक विकास से ज़्यादा उसके आत्मिक विकास को महत्त्व देती हैं। इतिहास और मिथक के द्वारा भी वे बार-बार मानव जीवन में इस प्रकार लौटते हैं मानो बेहतर मनुष्य की निर्मिति में संलग्न हों। मनुष्य के जीवन के प्रति कवि की दृष्टि को विश्लेषित करने का प्रयास इस उपअध्याय के अंतर्गत देखा जा सकता है। इस अध्याय का दूसरा उपअध्याय 'परंपरा और नवीनीकरण' है। परंपरा को दो तरह से ग्रहण किया जा सकता है। एक ज्यों का त्यों, दूसरा अपने तर्क की कसौटी पर कसकर। कुँवर नारायण दूसरे मार्ग के पथिक हैं। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं में व्यक्त अतीत के चिह्नों को रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है। अपनी सृजनात्मक प्रतिभा से कवि ने परंपरा का जो पुनःसृजन किया है, उसकी विवेचना इस उपअध्याय में की गयी है। कुँवर नारायण की कविताएँ एक ओर इतिहास के पुनर्पाठ का मार्ग प्रशस्त करती हैं तो दूसरी ओर मिथकों में वर्तमान जीवन संदर्भों को तलाशती हैं। चाहे अमीर ख़ुसरो हों या ग़ालिब, कबीर हो या सरहपा कुँवर नारायण की कविताओं में वे सिर्फ़

अतीत होकर नहीं रहते। उन्हें इन कविताओं में अपने काल से हमारे वर्तमान तक की यात्रा करते देखा जा सकता है। पाठ्यपुस्तकों में इतिहास-वर्णन सिर्फ़ सिंहासनों के इर्द-गिर्द घूमता है जबकि इन कविताओं में इतिहास से उन प्रतीकों को चुना गया है जो आम जीवन के ख़ास पहलुओं को उद्घाटित करते हैं। कवि सदियों के ऐतिहासिक और पौराणिक अनुभव से वर्तमान को गढ़ने की कोशिश करते हैं। कुँवर नारायण इतिहास को केवल तिथियों और घटनाओं की परिधि में रखकर नहीं देखते। इतिहास से प्राप्त जीवनानुभवों को उनकी कविताओं में व्यक्त होते हुए देखा जा सकता है। इस उपअध्याय में इन कविताओं में निहित परंपरा के निशान को पहचानने की कोशिश की गयी है। इस अध्याय का तीसरा उपअध्याय 'मिथकों का समकालीन संदर्भों में प्रयोग' है। कुँवर नारायण की सृजनशीलता ने मिथकों को नया सोपान दिया है। चाहे 'आत्मजयी' हो या 'वाजश्रवा के बहाने', चाहे महाभारत का कोई प्रसंग हो या यूनानी मिथकों पर आधारित कोई जीवन-अनुभव, कुँवर नारायण की कविताओं में ये सारे संदर्भ हमारे समय से जुड़ते हुए मालूम होते हैं। दरअसल कुँवर नारायण मिथकों की यात्रा करते ही इसलिए हैं क्योंकि वहाँ उन्हें चिंतन-मनन के लिए विस्तृत धरातल मिलता है। 'आत्मजयी' का नचिकेता जीवन की सार्थकता के जिन सवालों को उठाता है उसका संबंध जितना कठोपनिषद् से है, उससे ज़्यादा हमारे समय से है। इस उपअध्याय में कुँवर जी की मिथकीय कविताओं को वर्तमान जीवन-संदर्भों से जोड़कर देखा गया है। तीसरे अध्याय का अंतिम उपअध्याय 'कुँवर नारायण की नज़रों में कविता' है। कुँवर नारायण की कई कविताएँ 'कविता' के विषय में हैं। इन कविताओं को पढ़ते हुए हम महसूस कर सकते हैं कि कविता का विस्तार जीवन के हर उस क्षेत्र में है जहाँ व्यावसायिकता नहीं पहुँच सकती है। कवि के साक्षात्कारों, कलात्मक टिप्पणियों, आलेखों, डायरी लेखन आदि के माध्यम से पाठक यह जान सकता है कि कविता जीवन की अन्य भाषाई चेष्टाओं से भिन्न और विशिष्ट है। कविता मनुष्य की संवेदना और विवेक की रक्षा कर उपभोक्तावादी संस्कृति के वर्चस्व

को चुनौती देती है। जीवन-विवेक की रक्षा को कुँवर जी कविता की विशिष्टता के रूप में स्वीकारते हैं। कविता की पहुँच सिर्फ़ भौतिक जगत तक नहीं है बल्कि यह जीवन के उन मार्मिक स्थलों को भी छूती है, जो अदृश्य है। कविता को जब कुँवर जी आत्मिक विकास के साथ जोड़कर देखते हैं तब वे जीवन में उसकी अलग पहचान को चिन्हित कर रहे होते हैं। कुँवर जी कविता को जीवित रखना इसलिए भी ज़रूरी मानते हैं क्योंकि वह मनुष्यता के आधारभूत मूल्यों को पोषित करती है। इस उपअध्याय में कविता के महत्त्व और ज़रूरत को कुँवर नारायण की दृष्टि से देखने की कोशिश की गयी है।

4. **मूल्यों की कसौटी पर कुँवर नारायण की कविता:** यह शोध-प्रबंध का चौथा अध्याय है। इस अध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं में व्यक्त मूल्य के स्वरूप को विश्लेषित किया गया है। इस अध्याय का प्रथम उपअध्याय 'हिंदी कविता और मूल्य-चेतना' है। इसके अंतर्गत साहित्य के संदर्भ में 'मूल्य' की अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया है। इस उपअध्याय में हिंदी कवियों की मूल्य-चेतना को विश्लेषित किया गया है। हिंदी कवियों की मूल्य-चेतना हर काल में एक-सी नहीं रही है। मूल्य-चेतना के स्तर पर आये इस परिवर्तन को इस उपअध्याय के अंतर्गत समझने की कोशिश की गयी है। हालाँकि कुछ मूल्य ऐसे भी हैं जो शाश्वत हैं और जीवन से गहरे रूप में संबद्ध होने की वजह से हर काल की कविता में उसकी उपस्थिति को महसूस किया जा सकता है परन्तु इन मूल्यों की मौज़ूदगी भी कभी सघन तो कभी विरल होती है। इस उपअध्याय में पृष्ठभूमि के तौर पर पाश्चात्य एवं संस्कृत आचार्यों के काव्य-मूल्य संबंधी मतों का भी अवलोकन किया गया है। चौथे अध्याय का दूसरा उपअध्याय 'कुँवर नारायण की कविताओं में व्यक्त विविध मूल्य' है। इस उपअध्याय में कुँवर नारायण की कविताओं में निहित मूल्य-चेतना को विश्लेषित किया गया है। कुँवर नारायण के काव्य में सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक आदि मूल्यों को हम अभिव्यक्त होते हुए पाते हैं। उनकी कविताओं में निहित यह मूल्य-

चेतना मानव-हित से संबद्ध है। आज का मनुष्य जिस अवमूल्यन के दौर से गुजर रहा है उसने जीवन को सारहीन और निरर्थक बना दिया है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं में व्याप्त 'मूल्य-चेतना' को वर्तमान जीवनशैली के परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश की गयी है। आज का समाज 'मूर्त' वस्तुओं को पाने की होड़ में अपनी ज़िन्दगी को खर्च कर देता है। चूँकि 'मूल्य' अमूर्त है इसलिए इसकी कीमत से आज का मनुष्य अंजान है। कुँवर जी की कविताओं को पढ़ते हुए मूल्य की महत्ता से हम परिचित होते हैं। इस अध्याय का तीसरा उपअध्याय 'नैतिकता' है। कुँवर नारायण की कविताएँ मनुष्य को आत्मबोध के लिए प्रेरित करती हैं और नैतिक रूप से सजग रखती हैं। कवि नैतिक साहस का महत्त्व जानते हैं इसलिए जीवन की सार्थकता से इसके संबंधों को हम इनकी कविताओं में महसूस कर सकते हैं। इन कविताओं को बृहत्तर लोक-कल्याण के प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए। इस उपअध्याय के अंतर्गत इनकी कविताओं में व्यक्त नैतिकता के विविध स्वरूपों को उद्घाटित किया गया है। इस अध्याय का चौथा उपअध्याय 'प्रेम और जिजीविषा' है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर जी की कविताओं में प्रेम की अभिव्यक्ति को चिन्हित किया गया है तथा इन कविताओं में जो जीवन से लगाव है, उसकी पड़ताल की गयी है। कुँवर जी की कविताओं में प्रेम की उदात्त अभिव्यक्ति हमें देखने को मिलती है। उनकी कविताओं में प्रेम को ऊँचा स्थान प्राप्त है। वहीं दूसरी ओर विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी जीवन के प्रति जो सकारात्मक भाव इन कविताओं में देखने को मिलता है, वह दुर्लभ है। कुँवर नारायण की कविताओं में मनुष्य के चरित्र को मुश्किलों के समक्ष घुटने टेकते हुए नहीं दिखाया गया है बल्कि उनकी कविताओं में मानवीय चरित्र जीवन की जटिलता और संश्लिष्टता के साथ, बिना अपने जीवन-विवेक की बलि दिये हुए समायोजन की कोशिश करता है।

5. **कुँवर नारायण की कविताओं का अभिव्यक्ति पक्ष:** यह इस शोध-प्रबंध का पंचम और अंतिम अध्याय है। इस अध्याय के दो पक्ष हैं एक तो इसके अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं में व्यक्त भाषा के विविध पक्षों को उद्घाटित किया गया है तथा दूसरा भाषा के विविध पक्षों के विषय में कुँवर नारायण के विचारों का अवलोकन किया गया है। पहले का संबंध कुँवर जी की कविता से है तो दूसरे का संबंध कुँवर नारायण के आलेखों, टिप्पणियों, साक्षात्कारों एवं डायरी लेखन से है। इस अध्याय का पहला उपअध्याय 'कुँवर नारायण के भाषा-संबंधी विचार' है। कुँवर नारायण ने भाषा को कविता और जीवन दोनों के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण माना है। अपनी भेंट-वार्ताओं और आलेखों में भाषा के विविध पक्षों पर जो बेबाक राय कवि रखते हैं, उसका मूल्यांकन इस अध्याय के अंतर्गत किया गया है। इस अध्याय का दूसरा उपअध्याय 'प्रतीकात्मकता एवं बिम्ब-विधान' है। कुँवर नारायण ने अपनी कविताओं में एक तरफ़ सदियों की अनुभव-यात्रा को प्रतीक के माध्यम से वर्तमान अर्थ संदर्भों से जोड़ा है तो दूसरी तरफ़ उनकी कई कविताओं में सुंदर बिम्ब-योजना को देखा जा सकता है। बिम्ब के बोझ तले कुँवर नारायण की कविता दबती नहीं है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं में इस्तेमाल में लाये गये प्रतीकों एवं बिम्बों को उद्घाटित किया गया है। शोध-प्रबंध का अंतिम उपअध्याय 'काव्य-अभिव्यक्ति के अन्य-पक्ष' है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं की अन्य भाषिक विशिष्टताओं जैसे-'शब्द-भंडार, संवाद, अलंकार, फैंटेसी, व्यंग्यात्मकता आदि पर प्रकाश डाला गया है। ध्यातव्य है कि कुँवर नारायण की कविता के परिप्रेक्ष्य में शब्दों का संयोजन बहुत मायने रखता है। वे शब्दों का उपयोग इस तरह से करते हैं कि उसके अर्थ मात्र व्यंजित न होकर उस पूरी सांस्कृतिक यात्रा के अनुभव व्यंजित होने लगते हैं जिससे होकर वह शब्द हम तक पहुँचा है। अलंकार को वे कविता की बाह्य विशेषता ही मानते हैं परन्तु उनकी कविताओं में अलंकार का सुंदर प्रयोग हमें देखने को मिलता है।

इस शोध-प्रबंध में कुँवर नारायण की कविताओं में व्यक्त जीवन-दृष्टि एवं मूल्य-बोध के विविध पक्षों पर बिना किसी पूर्वाग्रह के विचार करने की कोशिश की गयी है। इनकी कविताओं में जीवन को दैहिक-दैनिक स्तर से ऊपर उठकर देखने का प्रयत्न किया जाता है। कुँवर जी की कविताओं को पढ़ते हुए उनकी उदात्त जीवन-दृष्टि की अभिव्यक्ति को हम कविता में महसूस कर सकते हैं। इस शोध-प्रबंध में उनकी कविताओं में व्यक्त विविध मूल्यों की पड़ताल की गयी है तथा वर्तमान जीवन-संदर्भों में उन मूल्यों की प्रासंगिकता को जानने की कोशिश की गयी है।